IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में बनते–बिगड़ते रिश्तों का दंश''

डॉ. ऋचा शुक्ला

क्यू–114, शिवालिक नगर, बी. एच. ई. एल. हरिद्वार उत्तराखण्ड –249403

सारांश :–

विभिन्न मुद्दों पर अपनी कलम चलाने वाली प्रसिद्ध और सम्मानीय लेखिका नासिरा शर्मा ने नारी मन की विभिन्न परतों को, पीड़ाओं को न सिर्फ समझा, बल्कि उनका हल भी प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास भी किया। नासिरा शर्मा नारी जीवन की जटिलताओं को बखूबी समझती है और नारी के आत्मसम्मान उसके अस्तित्व के लिए कलम भी उठाती है। कुमार पंकज के शब्दों में, ''नासिरा शर्मा उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने महिला मुद्दों को अपनी कलम का निशाना बनाया है। यह सच है कि महिला के दर्द को महिला से बेहतर भला कौन जान सकता है।''[1] नासिरा शर्मा नारी को मानवीय रूप में प्रस्तुत करती है। नासिरा जी भौगोलिक सीमा से परे जाकर नारीमन की परत–दर–परत टोह लेती है।

मूल शब्दः– रिश्तों का दंश, कथा साहित्य, नासिरा शर्मा, संबंध पारिवारिक संबंध, पितृसत्तात्मक, स्त्री–पुरुष, शाल्मली, महरुख, आदि।

प्रस्तावनाः

''लेखन का अर्थ केवल आपबीती कहना या अपना दुःख–दर्द उड़ेलना या दोषारोपण कर अपना क्रोध निकालना नहीं होता है। बल्कि उसे कलात्मक ढ़ंग से इस तरह कहना होता है कि वह आपकी आपबीती न लगकर जगबीती लगे।''

पारदर्शी व उदार व्यक्तित्व की धनी लेखिका नासिरा शर्मा ने बिना किसी लांग–लपेट के समाज में जैसा देखा, जैसा अनुभव किया उसे वैसे ही अपने साहित्य में उकेरा। अहं से कोषों दूर स्वाभिमानी नासिरा जी इंसानियत की पक्षधर है। घर और पारिवारिक संबंध व्यक्ति को सुरक्षा और अपनत्व का अहसास दिलाते हैं। परन्तु यही संबंधी कभी–कभी जाल से प्रतीत होते हैं। खासतौर पर पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री–पुरुष संबंध साइकल के दो पहिए है तो दूसरा घिसटता है। एक का विकास होता है तो दूसरे का समग्र व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है। बहुआयामी सृजन करने वाली लेखिका नासिरा शर्मा ने बनते–बिगड़ते संबंधों, की इस पीड़ा को, विषाद को बड़े ही मार्मिक ढ़ंग से उकेरा है।

दाम्पत्य जीवन पर आधार नासिरा शर्मा के उपन्यास 'शाल्मली' की नायिका शाल्मली अपने वैवाहिक संबंध को मधुर बनाने की पूरी कोशिश करती है परन्तु दंभी पुरुष नरेश पत्नी शाल्मली को पैरों की जूती समझता है। शाल्मली को अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। वह सोचती है– ''धर्म पत्नी बनकर इतना तिरस्कार, इतना अपमान, इतनी घृणा, इतना अंकुश यह भी कोई जीवन है? बार–बार मरघट तक ले जाने और जीवित जल जाने से पहले चिता से खींचकर उतारने का यह क्रम, बलपूर्वक जीवन दान देने की यह हठ..न पूरी तरह मरने दिया जाता है, न पूरी तरह जीने दिया जाता है। कभी–कभी जीवन और मृत्यु में कितना कम फर्क रह जाता है। आज उसे महसूस हो रहा है कि जैसे– वह स्वयं एक समशान घाट है, जहाँ पर उसके विचारों और भावनाओं का हर पल दाह संस्कार होता रहता है।''[2]

दिल के साथी का क्या अर्थ होता है, नरेश यह नहीं समझता। औरतें संबंधों को निभाती भर नहीं बल्कि उसे जीती हैं। परन्तु वास्तव में वे क्या चाहती हैं? उनकी इच्छा, आकांक्षा क्या है पुरुष ये जानना जरूरी नहीं समझता। वो सिर्फ एक लिबास तो

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

नहीं जिसे जरूरत पड़ने पर पहन लिया जाए और जरूरत पड़ने पर पहल लिया जाए और जरूरत खत्म होने पर उतारकर खूँटी पर टाँग दिया जाए। शाल्मली सोचती है– ''अच्छा सुनने और बोलने, समझने और महसूस करने की अपनी इस शक्ति को किस पत्थर के नीचे दबा दे, जो अपना सर उठा न सके।''[3] अपनी सारी कोशिशों के बाद उसे लगने लगा था कि कहीं, यह ग्रहण पूरा का पूरा उसके विवाहित जीवन को निगल न जाए।''[4]

समाज और परिवार, स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर बना है। इसमें दोनों की समान भागीदारी है। फिर क्यों उसे संचालित करने की जिम्मेदारी अकेले औरत के कंधों पर डाल दी जाती है। अपेक्षा हमेशा औरतों से ही की जाती है। मर्द सदैव अपनी प्रशंसा चाहता है। वह चाहता है कि सबकुछ उसके मुताबिक चले और औरत अपना सर्वस्व देकर भी कभी उसे संतुष्ट नहीं कर पाती।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास की नायिका महरुख अपने बचपन में रफत के साथ हुई टोटके की मंगनी को निभाने के लिए अपने को रफत के मनमुताबिक ढालती है परन्तु एक जगह टिक न पाने वाला रफत महरुख से दूर चला जाता है। रफत को महरुख के साथ किये गए बुरे बर्ताव का जय भी अफसोस नहीं होता। उल्टा वापस लौटने पर वह महरुख के वह उसे ही दोषी ठहराता है। महरुख का आत्मसम्मान चोटिल हआ था। वह बुरी तरह टूटी थी और ऐसी टूटी की फिर न किसी और से न रफत से ही दोबारा जुड़ पायी। आपकी शादी की बात सुनकर मैं टूटी थी, बिखरी थी और गेम की दीवानगी का सबसे खूबसूरत लम्हा सबसे बदसूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गया था। जिसके बारे में मैंने सोचा नहीं था और मेरे अंदर की और उसी लम्हें मर गयी थी

मैं हालात से लड़ते–लड़ते दम तोड़ गई थी। मुझे मेरी ही नजरों में जलील कर आपने ख्वाहिशों के जाल में फंसाकर अंदर की महरुख के परखच्चे उड़ा दिये थे। मैंने कितना सहा, कितनी टूटी। मेरा सुकून और सबकुछ मुझसे दूर चला गया था। आपकी ख्वाहिशों के पुल से गुजरती हुई मैं जिस हाल को पहुँची थी, वहाँ सिर्फ दलदल थीसिर्फ दलदल। मौत और जिंदगी के बीच लटकती वह मैं थी।''[5] संबंधों के टूटने का जितना खामियाजा औरतें भुगतती हैं, उनके टूटने की जितनी पीड़ा वे झेलती हैं उतना शायद मर्द नहीं। क्योंकि वो उसमें पूरी तरह घुल जाती हैं।

'खुदा की वापसी' कहानी की फरजाना निकाह की पहली ही रात पति के धोखे और झूठ से आदत हो कहती है–''मैं रोज तुम्हारे हांथों मरती हूँ, मुझे डर है कहीं मैं पागल न हो जाऊँ. लाख भूलने की कोशिश करूँ तो भी नहीं भूल पाती। हमारे प्यार की बुनियाद एक झूठ पर एक करेब पर शुरू हुई थी इसकी कसक मुझे तड़पाती है.। मेरा दर्द समझने की कोशिश करो. वह दर्द लाख या करोड़ के जेवर पहनने से खत्म नहीं होगा।''[6] फरजाना लाख सोचती है कि सबकुछ भूलकर हालात से समझौता कर ले पर दूसरे ही पल उसका आत्मसम्मान, उसका वजूद रोक देता है।

जब एक घर टूटता है तो उसका असर सिर्फ पति–पत्नी पर नहीं पड़ता, बल्कि उससे अन्य रिश्ते–नाते भी प्रभावित होते हैं। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरुख की सखी अमृता आत्मनिर्भर होते हुए भी पति के अत्याचारों को सहती है ताकि उससे उसके बच्चे प्रभावित न हो परन्तु वो तब टूट जाती है जब उसका पति बच्चों को भी उससे दूर कर देता है। अमृता महरुख से कहती है– समाज के लांछन मुझे तोड़ दे तो और उनके साथ रहना भी जैसे असंभव होता जा रहा है.। मैं थक गई, निचुड़ गई. अब नहीं सहा जाता। मैं अकेली क्या करूँगी, किस–किस को समझाऊँगी।''[7]

निष्कर्ष:

जीवन का उतार–चढ़ाव, विभिन्न संबंधों और रिश्तों को आयाम देता है। कहीं ये अंतर्संबंध मानसिक क्षोभ और क्लेश के कारक होते हैं तो कहीं आत्मज्याति के प्रेरक होते हैं। नासिरा शर्मा ने इन संबंधों की व्याख्या अपने कथा साहित्य में बहुत ही

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

सहजता और सादगी के साथ किया है। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति की सहयात्री रही नासिरा शर्मा किसी भी पक्ष के प्रति आतुरता और मोह का प्रदर्शन नहीं किया है।

लेखिका नासिरा शम्र ने नारी जीवन की विभिन्न विसंगतियों को बड़े ही बीरीकी से देखा–परखा, महसूस किया खासतौर पर मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के साथ किये जा रहे अनीति का और उस पीड़ा छटपटाहट को लेखिका ने बड़े ही मार्मिक ढ़ंग और सहजता से अपने कथा साहित्य में दर्शाया है।

संदर्भ स्रोतः–

[1]. कुमार, पंकज, जिन्दगी के असली चेहरे, आजकल पत्रिका।

[2]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 130

[3]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 26

[4]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 125

[5]. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मँगनी, पृ.सं. 116

[6]. शर्मा, नासिरा, खुदा की वापसी, पृ.सं. 30

[7]. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मँगनी।